सफर एक हिन्दुस्तानी का

नाम	:	**सिराज साहिल**
उम्र	:	**44 वर्ष**
शिक्षा	:	**बी.ए. एल.एल.बी.**
पेशा	:	**पत्रकारिता**
व्यक्तित्व		**दुश्मनों को भी नि:शस्त्र कर दे**
आवाज़	:	**मन-मस्तिष्क को झंकृत कर दे**
अंदाज़	:	**वक्त बदलने का आगाज़**
वाक् -पटुता	:	**पत्थरों के भी आकार बदल दे**

यूं तो दुनिया में अनेक लोग आते हैं-चले जाते हैं, इस फ़ानी दुनिया में चंद में स्थिरता है और उन्ही में है ''सिराज'' अर्थात् 'रौशनी-रौशनी का पुंज' और ''साहिल'' अर्थात् 'किनारा-सागर का किनारा'। जहां एक खुद को जला कर भी सारे जहां को रौशन करता रहता है, वहीं दूसरा मुश्किलों के सागर में भटके हुए का किनारा है, वो किनारा जहां से एक तसल्ली बक्श एहसास एक उत्साह के साथ भरी जिंदगी शुरू होती है। आइए अब कल्पना करते है कि जब दोनों ही इकट्ठे हो जाएं, 'सिराज' और 'साहिल' एक साथ, फिर लोगों को 'रौशनी' और 'जिंदगी' एक ही जगह पर मिलने लगेगी। और फिर क्या कहना जब ये दोनों ही गुण एक ही इंसान में मिल जाएं। और खुदा के फ़जल से ये कल्पना एक हकीकत बन खड़ी है, पिछले सालों से पल-पल निखरती, एक सामान्य से दिखने वाले शख़्स 'सिराज साहिल'को एक अत्यंत ही ख़ास शख़्सियत बनाती है।..... आइए मिलते हैं इन्हीं 'रौशन किनारे' से 'सिराज साहिल' से..... कहते हैं कि नाम का इंसान के जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है और वो नजर भी आता है, उसके कार्य-कलापों में। सिराज साहिल के साथ भी ऐसा ही है। जैसा नाम वैसा काम। चाहे वक्त कोई भी रहा, दौर कैसा भी। जो कोई भी इनके पास समस्याएं लेकर आया, समाधान पाकर झूमता हुआ वापस गया। इन्होंने हर एक का द ु:ख दर्द अपनाया और हर एक की झोली में खुशियां भरते रहे। मंझधार के अंधेरे में भटक रहे किसी के लिए सदा से ही एक 'रौशन किनारा' बने रहे हैं सिराज साहिल।

समाज-सेवा से सरोकार:

समाज-सेवा की भावना से ओत-प्रोत इस नौजवान ने जब कॉलेज की सीढ़ियों पर कदम रखा तो बड़े ही जोश के साथ बी.ए.एल.एल.बी. की डिग्री हासिल करते हुए राजनीति और पत्रकारिता के क्षेत्र को अपनाया। इस फैसले में होश का सामंजस्य इनकी परिपक्वता को परिलक्षित कर रहा था। फिर जो सफ़र शुरू हुआ,'दिल्ली नगर निगम' तक पहुंचा और अब भी जारी है। समाज सेवा की इसी कड़ी में 'कलम' को भी अपना 'हथियार' बनाया और खामियों-समस्याओं से लड़ने के लिए कूद पड़े 'पत्रिकारिता' के मैदान में। 'राष्ट्रीय सहारा' से शुरू हुआ यह सफ़र अब तक आम-जन की समस्याओं-परेशानियों से 'सरोकार' रख रहा है। मजलूमों की मदद करने की इसी चाह ने इन्हें एक गैर सरकारी समाज सेवी संस्था का गठन करने हेतु प्रेरित किया और अस्तित्व में आई ''जन-सरोकार''।

राजनीति से सरोकार:

राजनीति में पदार्पण करते हुए सिराज साहिल ने सन् 1991 में लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र संघ के चुनाव में 'महामंत्री' पद के लिए संघर्ष किया। दलगत संकीर्ण राजनीति, जाति-धर्म-वर्ण आधारित व्यवस्था को दरकिनार कर, सभी को साथ लेकर चलते हुए, अन्याय का विरोध करते हुए, मुद्दों पर आधारित लड़ाई लड़ी। चुनाव हारे, पर विश्वास नहीं। बाधाएं मुश्किलें झेली, पर समझौता नहीं किया, विचारधारा से। राजनीति की हर तपिश सही, पर आंच नहीं आने दी अपने धर्म-निरपेक्ष (वास्तविक, मुखौटा नहीं) और विकास-परक छवि पर। निडर, साहसी, बेबाक और वाक्-पटु 'सिराज साहिल' अपनी जुझारू छवि के साथ जिस रास्ते से भी गुज़रे कामयाबी ने बड़े ही अदब के साथ इस्तकबाल किया। आम-जन और उनकी समस्याओं से जुड़े रहने की वजह से ही इन्हें अपार जन-समर्थन हासिल है। इसकी बानगी देखने को मिली सन् 2007 के दिल्ली नगर निगम के चुनाव में, जब इन्होंने 'निगम पार्षद' के पद के लिए 'नेशनल लोकतांत्रिक पार्टी' के उम्मीदवार के रूप में पूर्वी दिल्ली के दिलशाद गार्डन, वार्ड नं. 241 से चुनाव लड़ा। बेशक चुनाव हार गए, पर कभी भी और किसी भी प्रकार की परिस्थितियां इन्हें अपना सामाजिक और विकासशील 'चरित्र' बदलने पर मजबूर नहीं कर सकी। जवां हौसले और बुलंद इरादों से लबरेज़ 'सिराज साहिल' अपने जुझारू तेवर के साथ अनथक बढ़े जा रहे हैं राजनीति के गलियारों में, एक 'जन-सरोकार' वाले समाज-

सेवक के रूप में 'नेता जी' के रूप में नहीं। इस वजह से सभी इन्हें पूर्ण सम्मान प्रदान करते हैं।

पत्रकारिता से सरोकार:

कलम के धनी 'सिराज साहिल' का रूझान अगर लेखन और पत्रकारिता को लेकर हुआ तो इसमें कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं था, ये तो स्वाभाविक था। समाज के वास्तविक हालात से द्रवित एवं आक्रोशित होकर 'मजलूमों की आवाज़' उठाने के लिए और 'हक की लड़ाई' लड़ने के लिए इन्होंने 'कलम' को 'हथियार' और 'अखबार' को 'मैदान-ए-जंग' में बदल डाला। कॉलेज के दिनों में ही मीडिया से जुड़े। शुरूआत की सन् 1991 में जब संवाददाता के रूप में 'राष्ट्रीय सहारा' (लखनऊ) से जुड़े और महज दो वर्षो की छोटी-सी अवधि में ही प्रोन्नत होकर मुख्य कार्यालय दिल्ली पहुंचे, तब से लेकर अब तक तूफान की रफ्तार से बड़े ही चले जा रहे हैं। हर वक्त अपनी मुखरता को नयापन और पैनापन देते रहने वाले 'सिराज साहिल' ने सन् 1995 में 'अक्षर भारत' की ओर रूख किया, पुन: सन् 1996 में 'कुबेर टाइम्स' के आमंत्रण पर उनका 'झंडा' बुलंद करने पहुंचे। हर किसी को एक मुखर, जुझारू और संवेदनशील पहचान देते हुए सन् 1999 में ''खबरदार इंडिया'' पहुंचे। कई बार स्वेच्छा से कुछ नया करने की चाहत में और कई बार अपने सिद्धांतों के साथ समझौता न करने की कीमत के तौर पर अखबार बदलते रहे पर विचार नहीं बदला, व्यवहार नहीं बदला, आम-जन से अपना 'सरोकार' नहीं बदला। अब बारी थी एक बार फिर अखबार बदलने की, सन् 2002 में ''खबरदार इंडिया'' छोड़कर ''शाह टाइम्स'' के साथ जुड़े। अब तक अखबारों के दफ्तर बदलते हुए ऊब चुके 'सिराज साहिल' ने वो राह चुनी जिसे चलना जितना कठिन है, उस विषय में सोचना भी एक अकेले इंसान के लिए एक दु:स्वप्न से कम नहीं। पर थकना और हारना तो इन्होंने सीखा ही नहीं, बस चल पड़े अकेले ही, और फिर सन् 2005 का वो दिन भी आया जब इन्हें अपनी पहचान मिली ''सरोकार'' 'मासिक', 'पाक्षिक', 'साप्ताहिक' और 'दैनिक' के रूप में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। पत्रकारिता की दुनिया में अपनी बेबाकी और सच्चाई के लिए पहचाने जाने वाले 'सिराज साहिल' सिद्धांतों के इतने पक्के हैं कि सन् 2002 में जब ''दिल्ली सरकार के सूचना एवं प्रचार निदेशालय'' ने इनके 'प्रेस प्रत्यायन कार्ड' का नवनीकरण करने से इंकार कर दिया तो इन्होंने इस काम के लिए किसी को खुश करने के बजाए शिकायत-वाद दर्ज करना बेहतर समझा। ''भारतीय प्रेस परिषद'' में आखिरकार इनका दाबा स्वीकार किया गया और 'दिल्ली सरकार के सूचना एवं प्रचार निदेशालय' द्वारा इनके 'प्रेस प्रत्यायन कार्ड' को बहाली की गई। ये जीत थी सच्चाई की, जीत थी सिद्धांतों की और जुझारूपन की।

कानून एवं संविधान से सरोकार:

कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद 'सिराज साहिल' की पत्रकारिता और भी धारदार हुई। साथ ही आम-जन की समस्याओं को सुलझाने में भी इन्होंने अपने कानूनी -ज्ञान का हर संभव उपयोग किया। यही वजह रही कि न सिर्फ पत्रकारिता की दुनिया में बल्कि आम-जन की समस्याओं से जुड़े हर विभाग में इन्हें उचित इज्जत प्राप्त होती रही है। यही वजह है कि खुली आँखों से दुनिया को देखते हैं और खुले परन्तु तीक्ष्ण मस्तिष्क से सही एवं उचित राय कायम करते हैं। यही वजह है कि 'धर्म' और 'जाति' जैसे सामाजिक बंधन भी इन्हें बांध नहीं पाते हैं और ये छद्म धर्म निरपेक्षता, छद्म वर्ण-व्यवस्था और छद्म समाजवाद तक के घोर विरोधियों की जमात में खड़े नज़र आते हैं। सच्ची और सही बातें 'कड़बी' तो होती हैं पर 'दवा' के समान, जो समाज और राजनीति में व्याप्त बुराइयों को बीमारियों की तरह ही जड़ से समाप्त करने की क्षमता रखती है। यही वजह है कि ये सच्चाई और उचित का साथ नहीं छोड़ते हैं, तकलीफें झेलते हैं पर अपनी राह नहीं छोड़ते हैं, और यह सफर अब भी जारी है...अनवरत... अनथक...

गर जूझने का नाम ही जिंदगी है,
ये तय है जुझारू को मिलती मंजिल है।
हर शख़्स की आवाज़ को अंजाम देना,
पहचान हो, ये कलम-ए-सिराज साहिल है।
मंजिलें और भी हैं.....जंग जारी है.....

संपर्क:-
सिराज साहिल
रॉयल अपार्टमेंट, बी-58, टी-5,
दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली-1100 95
मोबाइल: 9958449947

सरोकार समूह की शुरुआत

हिन्दुस्तान में बढ़ रही अराजकता और शोषण को जब एक नौजवान ने बारीकी से महसूस किया तो उसे लगा कि कब तक किसी मसीहा से महान पुरूष का इंतजार करना पड़ेगा जो समाज में फैली अराजकता तथा शोषित समाज की लड़ाई लड़ सके। बस यही ख्याल उस नौजवान के मन में घर कर गया और लखनऊ विश्व विद्यालय से कानून की डिग्री हासिल करने के बाद उसने जेहन को इस बात के लिए मनाया और समझाया कि क्यों न वो खुद ही इस गंदगी को समाज से उखाड़ फेंके। बस फिर क्या था इस विचार ने उसको मीडिया की तरफ मोड़ा और आपका पाक्षिक के बाद शटल साप्ताहिक, राष्ट्रीय सहारा, अक्षर भारत, स्केप्टिक्स इंडिया प्राइवेट लि., शाह टाइम्स और फिर दैनिक सीएनएन में अहम जिम्मेदारी के पदों पर कार्य किया। अपनी मेहनत तालीम के बल पर आगे बढ़ना शुरू किया। इस बात की कल्पना की जा सकती है कि एक ऐसा नौजवान जिसकी दाढ़ी-मूँछ भी अभी पूरी तरह नहीं निकल पाई थी उसकी कार्य करने की शक्ति को भांपते हुए खबरदार इंडिया के माध्यम से भारत सरकार के प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) ने 1999 में उन्हें प्रेस प्रत्यायन कार्ड जारी किया जो कि अभी भी लगातार सेवाओं के रुप मे जारी है। परंतु अन्य ग्रुप में समाज के शोषित वर्ग की आवाज को आजादी से न उठा पाने के कारण इस युवक ने स्वयं अपने समाचार पत्र का पंजीयन सन् 2000 में सरोकार पाक्षिक के रुप में कराया और मो. सिराज साहिल खुद इसके मुद्रक, स्वामी, संपादक व प्रकाशक बने। धीरे-धीरे और कारवां बनता गया तत्पश्चात सरोकार साप्ताहिक, सरोकार मासिक और अब सरोकार दैनिक दिल्ली व लखनऊ संस्करण भारत के समाचार पंजीयन कार्यालय में दर्ज हैं।आज सरोकार प्रकाशन समूह के पास स्वतंत्र कार्य के लिए प्रेस एरिया प्रताप भवन, चतुर्थ तल पर कार्यालय है। स्टाफ, टेक्नीकल स्टाफ, मार्केटिंग स्टाफ, सर्कुलेशन, मैनेजमेंट तथा कंप्यूटर से लेकर हर वो आधुनिक उपकरण मौजूद हैं जो कि एक मीडिया समूह को चलाने के लिए पर्याप्त होते हैं। इस समूह का कुछ कार्य समझौते के अनुसार बाहर भी कराया जाता है, प्रिटिंग का कार्य उसमें से एक है। समाचार पत्र का संपूर्ण कार्य एक टीम के जरिए किया जाता है। बाकी कार्य मशीन से छपने के बाद सर्कुलेशन टीम द्वारा वितरित कर दिया जाता है और इस तरह हम समाज की आवाज़ राजनायिक तथा सत्ता के गलियारों तक पहुंचाते हैं और सत्ता से फायदा पहुंचाने वाली तमाम बातें जनता तक पहुंचाते हैं।

सरोकार पत्र समूह के प्रकाशनों का ब्यौरा इस प्रकार है:-	**पंजीयन संख्या**
सरोकार दैनिक (राष्ट्रीय संस्करण)	डीइएलएचआईएन 2005 / 16576
सरोकार साप्ताहिक	डीइएलएचआईएन 2002 / 8954
सरोकार पाक्षिक	डीइएलएचआईएन 2000 / 478
सरोकार मासिक	डीइएलएचआईएन 2005 / 16327
सरोकार दैनिक (लखनऊ संस्करण)	यूपीएचआईएन 2007 / 24030